पहाड़

20-21

स्मृति अंक : एक

बद्रीदत्त, मोहन जोशी, दुर्गादत्त, मनोहर पन्त,
रामसिंह, मथुरादत्त, पूरन तिवाड़ी

स्वाधीनता पूर्व के 'शक्ति' सम्पादकः एक सिंहावलोकन

• ज्योति साह

1913 में बद्रीदत्त पाण्डे ने अलमोड़ा आकर 'अलमोड़ा अखबार' का सम्पादन कार्य संभाला। 'अलमोड़ा अखबार' ने बद्रीदत्त के सम्पादकत्व में राष्ट्रवादी स्वरूप धारण किया। कुली बेगार, जंगलात नीति, भ्रष्ट नौकरशाही, सामाजिक कुरीतियों, आर्थिक शोषण, सरकारी नीतियों आदि अनेकों विषयों को बद्रीदत्त ने 'अलमोड़ा अखबार' में उठाया। सरकारी दमन के कारण 1918 में 'अलमोड़ा अखबार' का प्रकाशन बन्द हो गया।

समाचार पत्र का मूल्यांकन उसके सम्पादकों के व्यक्तित्व और सोच को जाने बगैर नही किया जा सकता। सम्पादक ही अपने विचारों के माध्यम से पत्र के वास्तविक स्वरूप को स्पष्ट करता है। कुमाऊँ के प्रमुख पत्र 'शक्ति' को राष्ट्रवादी स्वरूप प्रदान करने का कार्य इसके सम्पादकों द्वारा किया गया। ये सभी सम्पादक राष्ट्रीय संग्राम के सक्रिय कार्यकर्त्ता थे और स्थानीय और राष्ट्रीय आन्दोलनों का नेतृत्व कर रहे थे। उन्होंने अपनी बात कहने के लिए 'शक्ति' का एक मंच के रूप में प्रयोग किया।

यहाँ 'शक्ति' के सम्पादकों द्वारा स्थानीय और राष्ट्रीय आन्दोलनों के संदर्भ में पत्र के माध्यम से किये गये उनके योगदान का उल्लेख किया जा रहा है।

1.बद्रीदत्त पाण्डे

'शक्ति' के संस्थापकों में एक और प्रथम सम्पादक बद्रीदत्त पाण्डे कुमाऊँ में राष्ट्रवादी पत्रकारिता के जनक थे। वह कुमाऊँ के अग्रणी राष्ट्रवादियों में थे और राष्ट्रीय भावनाओं के प्रसार के लिए ही उन्होंने पत्रकारिता को माध्यम बनाया। उनका जन्म 15 फरवरी 1882 को पुरोहित वैद्यक परिवार में कनखल (हरद्वार) में हुआ था। बचपन में ही माता-पिता का देहान्त हो गया था। उन्होंने प्रारम्भिक शिक्षा अलमोड़ा के हिन्दू हाईस्कूल से प्राप्त की। धनाभाव के कारण वे उच्च शिक्षा प्राप्त न कर सके और सरगुजा रियासत में नौकरी करने लगे। 1903 में उन्होंने डायमण्ड स्कूल, नैनीताल और 1905 में देहरादून सैनिक निर्माण विभाग में नौकरी की। 1908 में बद्रीदत्त इलाहाबाद आए और शीघ्र ही 'लीडर' नामक पत्र के सह-सम्पादक बन गए। 1910 में देहरादून आकर उन्होंने 'गढ़वाली' और 'कास्मोपोलिटन' पत्रों में कार्य किया। 'गढ़वाली' में कार्य करते हुए उन्होंने स्थानीय पत्रकारिता के महत्व को समझा।

स्थानीय समस्याओं और राष्ट्रीय घटनाओं ने बद्रीदत्त के हृदय में ब्रिटिश सरकार के प्रति आक्रोश को जन्म दिया। विवेकानन्द, मालवीय और ऐनी बीसेन्ट के अलमोड़ा आगमन ने बद्रीदत्त पाण्डे पर अत्यन्त गहरा प्रभाव डाला।